शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक साहित्य संकलन

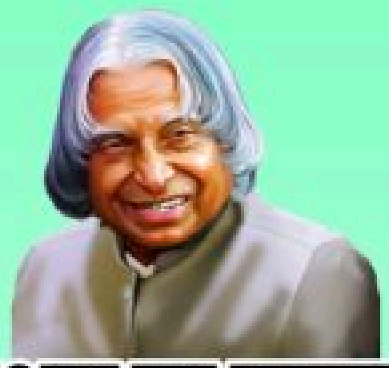

शिक्षक का सम्मान

अंक : 62

शिक्षण संवाद

माह : मई वर्ष : 2026

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं।

अंक : 62

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र कुमार जादौन, श्री प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

श्री आनंद मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, श्री बबलू सोनी

सह-सम्पादक

श्री सुशांत सक्सेना, श्री शंखधर द्विवेदी

छायांकन

श्री वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

श्री जितेन्द्र कुमार, श्री अनिल मौर्य, श्री विकास शर्मा

विशेष सहयोगी

श्री विकास मिश्रा, श्री अफ़ज़ाल अहमद, श्री साकेत बिहारी शुक्ल

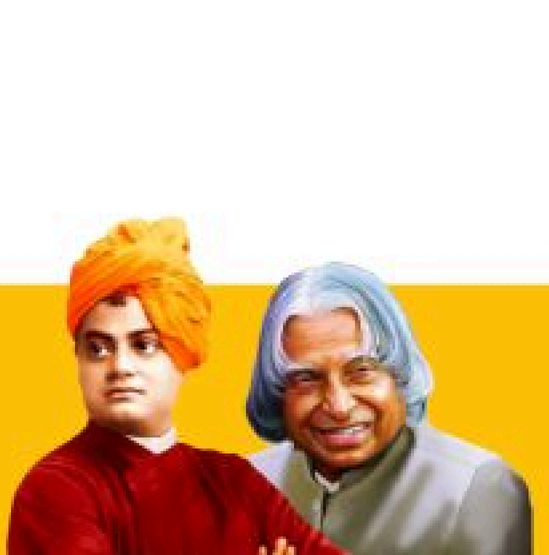

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं संपर्क नं० :-
9458278429

ई मेल :-
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :-
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना संदेश

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर मेरी ओर से समस्त संपादक मंडल, शिक्षक साथियों, लेखकों और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी कर्मयोगियों को हृदय से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान और अनुभवों को साझा करने से और अधिक समृद्ध होती है। इस दृष्टि से 'शिक्षण संवाद' नाम ही अपने आप में इस पत्रिका के उद्देश्य को सार्थक करता है। यह पत्रिका शिक्षकों के बीच एक सेतु का कार्य कर रही है, जो कक्षा की चारदीवारी में हो रहे नवाचारों, नई शिक्षण तकनीकों और जमीनी अनुभवों को एक-दूसरे तक पहुँचा रही है।

आज जब शिक्षा में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं, नई शिक्षा नीति लागू हो रही है, ऐसे समय में इस प्रकार की पत्रिका की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह पत्रिका न केवल शिक्षकों को नई दिशा दे रही है, बल्कि उनके मनोबल को भी बढ़ा रही है। इसमें प्रकाशित होने वाले शैक्षिक आलेख, कक्षा-कक्ष के सफल प्रयोग, प्रेरक प्रसंग और शिक्षकों की कलम से निकले विचार निश्चित ही पूरे प्रदेश के शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत बनेंगे।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आप निःस्वार्थ भाव से, बिना किसी संसाधन के, केवल शिक्षा के प्रति समर्पण से इस ज्ञान यज्ञ को चला रहे हैं। यह शिक्षकों के लिए, शिक्षकों द्वारा किया जा रहा एक अनुकरणीय प्रयास है।

मैं कामना करती हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार अनवरत रूप से प्रकाशित होती रहे, इसकी पहुँच उत्तर प्रदेश के ही नहीं, बल्कि देश के कोने-कोने में कार्यरत प्रत्येक शिक्षक तक पहुँचे और यह शिक्षण को और अधिक रोचक, प्रभावी और आनंददायी बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर प्रगति के लिए मेरी अनंत मंगलकामनाएँ।

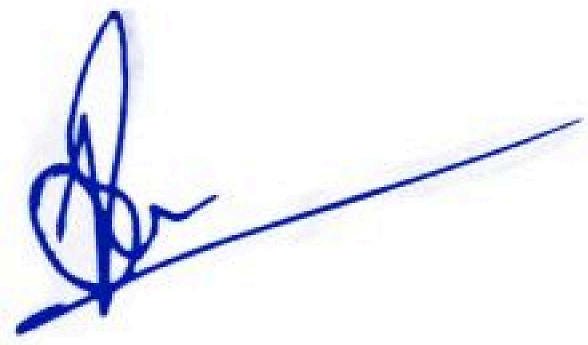

सीमा सिंह (प्रधानाध्यापक)
कम्पोज़िट विद्यालय ऑन
शीतलपुर- एटा
(राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक)

संपादकीय

प्रिय शिक्षक साथियो, शिक्षाविदो, अभिभावको एवं मेरे प्यारे विद्यार्थियों!

शिक्षा केवल पुस्तकों के पन्नों में लिखे ज्ञान को याद कर लेने का नाम नहीं है। बल्कि "शिक्षा वह प्रकाश है, जो मनुष्य के भीतर विवेक, संवेदना, जिम्मेदारी और मानवता को जागृत करता है।" आज जब हमारा समाज तकनीकी परिवर्तन, प्रतिस्पर्धा और तेजी से बदलती जीवनशैली के दौर से गुजर रहा है, तब शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य पर पुनर्विचार करना और भी अधिक आवश्यक होता जा रहा है।

आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं है कि बच्चों को अधिक से अधिक जानकारी कैसे दी जाए, बल्कि चुनौती यह है कि "जानकारी को समझ में, समझ को व्यवहार में और व्यवहार को अच्छे संस्कारों में कैसे बदला जाए।"

एक बच्चा गणित का कठिन प्रश्न हल कर सकता है, विज्ञान के सिद्धांत समझ सकता है और अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर सकता है, लेकिन यदि वह अपने माता-पिता, शिक्षक, सहपाठियों और समाज के प्रति सम्मान एवं संवेदना नहीं रखता, तो हमारी शिक्षा अधूरी है। वहीं इसके विपरीत, जब ज्ञान के साथ विनम्रता, अनुशासन, सहयोग, सत्यनिष्ठा और सेवा का भाव विकसित होता है, तभी शिक्षा वास्तव में जीवन निर्माण का माध्यम बनती है।

इसीलिए एक शिक्षक को इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण वाहक माना जाता है तथा उससे सबसे अधिक उम्मीद भी की जाती है क्योंकि एक शिक्षक का व्यवहार ही बच्चों की पहली पाठ्यपुस्तक है। हम जैसा बोलते हैं, जैसा दूसरों का सम्मान करते हैं, कठिन परिस्थितियों में जैसा धैर्य रखते हैं और समाज के प्रति जैसी जिम्मेदारी निभाते हैं, बच्चे उसे देखकर सीखते हैं। शिक्षक का प्रत्येक शब्द और प्रत्येक आचरण स्वयं में एक मौन पाठ के समान होता है।

इसीलिए आज आवश्यकता है कि विद्यालयों में 'प्रतियोगिता के साथ सहयोग' और 'अंकों के साथ मानवीय मूल्य' के लिए भी समान प्रयास हों। बच्चे को केवल यह न सिखाया जाए कि उसे जीवन में कितना आगे जाना है, बल्कि यह भी सिखाया जाए कि आगे बढ़ते हुए वह कितने लोगों को साथ लेकर चल सकता है।

आज तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सीखने के अनेक नए रास्ते खोल दिए हैं। इनका विवेकपूर्ण उपयोग शिक्षा को अधिक प्रभावी, सरल और रोचक बना सकता है। लेकिन हमें यह भी याद रखना होगा कि कोई भी तकनीक शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती। क्योंकि मशीन जानकारी तो दे सकती है, परन्तु संवेदनाएँ नहीं दे सकती है। मशीन उत्तर दे सकती है, परन्तु जीवन का उद्देश्य नहीं दे सकती है। मशीन सुविधा दे सकती है, परन्तु संस्कार नहीं दे सकती है। इसलिए शिक्षा के साथ अब यह भी ध्यान रखना है कि शिक्षा में तकनीक का उपयोग हो, लेकिन मानवता का भी स्थान सर्वोच्च रहे।

संपादकीय

क्योंकि हमारे विद्यालय समाज की एक छोटी-सी प्रयोगशालाएँ हैं। यदि हम यहाँ स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, जल बचाने, पौधारोपण, पशु-पक्षियों के प्रति करुणा, बुजुर्गों के सम्मान और जरूरतमंदों की सहायता जैसे छोटे-छोटे कार्य बच्चों के दैनिक जीवन का हिस्सा बना दें, तो आने वाली पीढ़ी केवल सफल नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी बनेगी।

मेरा विश्वास है कि शिक्षा का सबसे सुन्दर परिणाम वह है जब कोई बच्चा अपनी सफलता को केवल अपना अधिकार न मानकर समाज के लिए अवसर समझने लगे। जब वह कहे—"मैं भी पढ़ूँगा और किसी दूसरे को पढ़ने में मदद भी करूँगा।" यही शिक्षा से सेवा की ओर बढ़ने का मार्ग है।

'शिक्षण संवाद' का उद्देश्य भी इसी विचार को निरंतर आगे बढ़ाना है। शिक्षकों के अनुभवों को साझा करना, नव सृजन को मंच देना, विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और शिक्षा को मानवीय मूल्यों से जोड़ना। हमारा प्रयास है कि विद्यालय केवल परीक्षा परिणाम देने वाले संस्थान न रहें, बल्कि ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करें जो अपने परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति संवेदनशील हों।

आइए, हम सभी मिलकर ऐसी शिक्षा का निर्माण करें जिसमें ज्ञान हो तो विवेक के लिए, सफलता हो तो सेवा के लिए, तकनीक हो तो मानव कल्याण के लिए और जीवन हो तो मानवता के लिए।

इसी विश्वास और संकल्प के साथ "शिक्षण संवाद" के इस अंक को पढ़ने, फीडबैक लिखने और अधिक से अधिक बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों तक भेजने के लिए आपका बहुत-बहुत आभार!

सादर

विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद

अनुक्रमणिका

मिशन गीत - ज्ञान की ज्योति जलाएँ हम	8
विचारशक्ति - किताबों का मन्दिर	9-10
टीएलएम संसार - सम और विषम संख्याएँ	11
नवाचार - कहानी के पात्रों का मॉडल	12
बात महिला शिक्षकों की - संघर्ष, चुनौतियाँ और राह	13-14
English Medium Diary - Transforming rural education	15-17
प्रेरक प्रसंग - महाराणा प्रताप	18-19
सद्विचार - Bhagat Singh (The power of courage and ideas)	20
शैक्षिक तकनीकी - ज्ञानदीप QR ई लर्निंग	21
बाल कविता - नैतिक आचरण	22
बाल कहानी - लोहे के स्तम्भ की अद्भुत कहानी	23-24
शैक्षिक गतिविधि - विलयन	25
दिवस विशेष - बुद्ध पूर्णिमा	26-27
खेल विशेष - खेलों का महत्व	28
बाल फिल्म - द ग्रेट ग्रैंड सुपर हीरो	29-30

ज्ञान की ज्योति जलाएँ हम

ज्ञान की ज्योति जलाएँ हम,
शिक्षा का दीप जलाएँ हम।
हर बच्चे के सपनों को,
मिलकर पंख लगाएँ हम।
मिशन शिक्षण संवाद हमारा,
शिक्षा का उजियारा।
हर विद्यालय, हर बच्चा,
हो अपना सबसे प्यारा।

गाँव-गाँव और हर बस्ती में,
शिक्षा की अलख जगाएँ।
जो बच्चा पीछे रह जाए,
उसका हाथ पकड़कर लाएँ।
पढ़ना, लिखना, गिनना सीखें,
सीखें नई उड़ान।
हर बच्चे की प्रतिभा बोले,
बढ़े उसका सम्मान।

ज्ञान की ज्योति जलाएँ हम,
शिक्षा का दीप जलाएँ हम।
मिशन शिक्षण संवाद के संग,
नया सवेरा लाएँ हम।

शिक्षक हैं बदलाव के साथी,
बच्चे हैं अरमान।
मेहनत, नवाचार और समर्पण,
बनें हमारी पहचान।
मिलकर सीखें, मिलकर सिखाएँ,
अनुभव बाँटें साथ।
शिक्षा की हर नई पहल को,
दें सफलता का हाथ।

निपुण बने हर बालक-बालिका,
सीखने में हो विश्वास।
खेल-खेल में ज्ञान मिले और,
खुशियों से भरी हो कक्षा।
पुस्तक, गतिविधि, तकनीक के संग,
बढ़े सीखने की चाह।
हर बच्चा बोले गर्व से,
“मैं कर सकता हूँ, वाह!”

नहीं किसी में भेदभाव हो,
सबको मिले समान अवसर।
शिक्षा से सशक्त बने हर बच्चा,
आज और बेहतर कल।
गुणवत्ता की ओर बढ़ेंगे,
लेकर दृढ़ संकल्प।
बेसिक शिक्षा के नव निर्माण का,
हम सब लें विकल्प।

चलो कदम से कदम मिलाएँ,
नई दिशा दिखलाएँ।
शिक्षा के इस पावन यज्ञ में,
अपना योगदान निभाएँ।
हर बच्चे की आँखों में फिर,
सपनों का संसार हो।
मिशन शिक्षण संवाद के संग,
शिक्षा का जय-जयकार हो।

ज्ञान की ज्योति जलाएँ हम,
शिक्षा का दीप जलाएँ हम।
हर बच्चे के सपनों को,
मिलकर पंख लगाएँ हम।
मिशन शिक्षण संवाद,
शिक्षा का सशक्त संवाद।

अलका (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय हीरागंज
विकास खण्ड- बाबागंज, जनपद- प्रतापगढ़

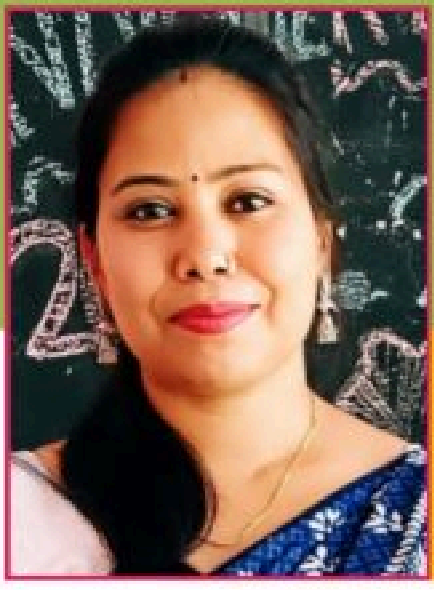

किताबों का मंदिर

अक्सर हम जिन्हें अपना आदर्श मानते हैं उनकी दो-चार तस्वीरें लाकर अपने घरों में लगा लेते हैं या उनकी मूर्तियाँ बिठाकर उन्हें पूजने लगते हैं पर मेरा मनाना है कि उन्हें पूजने की बजाय हमें उनके आदर्श विचार, तर्क और सोच को फॉलो करना चाहिए। उनके आदर्श विचारों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने जो सही रास्ता चुना और जिस मार्ग पर वे चले, उसी मार्ग पर हमें भी चलना चाहिए और हम क्या करते हैं कि उनके विचारों से प्रभावित होकर उनको पूजने लगते हैं और उनको पूजते-पूजते भगवान का दर्जा दे देते हैं। उनके आदर्श विचार और मूल बातों को भूल जाते हैं और उनको पूजते-पूजते अपने मस्तिस्क को यह सिग्नल देने लगते हैं कि इनको पूजने से हमें शक्ति, ज्ञान, धन और समृद्धि प्राप्त होगी, पर यह गलत है। हमें उनकी मूर्ति और तस्वीरों को इकट्ठा करके पूजने की बजाय उनकी संग्रह की गई किताबों और उनके द्वारा रचित किताबों को अपने घरों में स्थान देना चाहिए, चाहे घर छोटा हो या बड़ा पर हमें एक कोना हमेशा अच्छी किताबों के लिए जरूर बनाना चाहिए। जैसे हमने अपने घरों में मंदिर को स्थान दिया है, ठीक उसी प्रकार हमें अच्छी किताबों को भी अपने घरों में स्थान देना चाहिए। हमारे घरों में एक छोटी सी पुस्तक की अलमारी जरूर होनी चाहिए जिसमें विश्व प्रसिद्ध लेखकों की कम से कम एक किताब तो जरूर रखनी चाहिए और जब भी फुर्सत मिले हमें इनका अध्ययन आवश्य करना चाहिए। इससे हमारे ज्ञान का विस्तार होगा और हमें सही मार्ग प्राप्त होगा। यह जीवन इतना लम्बा है कि अक्सर हम अपने रास्ते से भटक जाते हैं जिससे हमे जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मैं शत प्रतिशत गारंटी के साथ यह विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि सही किताबों का अध्ययन करने से आपका जीवन पूरी तरह से बदल जाएगा। आपके अंदर के जितने भी बुरे विचार, भ्रम, दुविधा, प्रश्न हैं सब खत्म हो जाएंगे, जिनकी खोज में हम दर-दर भटकते रहते हैं, कभी कोई महात्मा और कभी किसी बाबा के चक्कर में फंसकर अपना वक्त और जीवन खराब करते हैं। आप एक बार किताबों से प्रेम करके तो देखें आपके अंदर के सभी संदेह दूर हो जाएंगे, फिर आप ज्ञान और तर्क के साथ बात करना सीख जाएंगे। तब इस ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुओं जीवित या निर्जीव सभी की उपस्थिति का ज्ञान हो जाएगा।

इतिहास से लेकर विज्ञान तक की वह सभी किताबें पढ़ें जो आपको सही मार्गदर्शन दें। हमारा जीवन अस्थाई है और हम सिर्फ एक निश्चित समयावधि के लिए ही इस धरती पर मौजुद हैं। इसी बीच हमारे साथ अनेक घटनाएं घटती रहती हैं और हम इसे अलग-अलग तरिके से अनुभव करते हैं, जिन्हें हम बोलकर या लिखकर अपनी संवेदनाओं और भावनाओं को दूसरे तक पहुँचाते हैं।

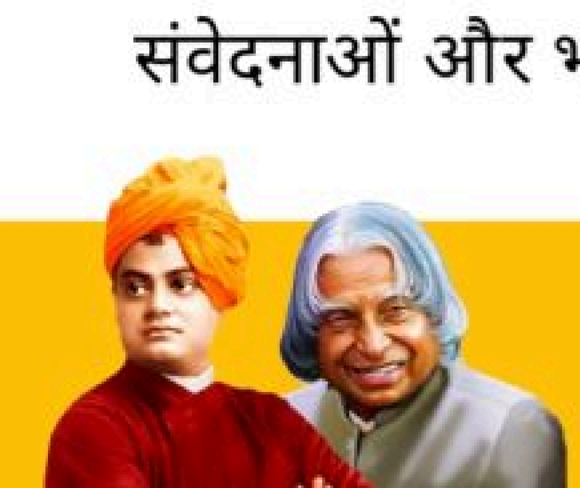

किताबों का अध्ययन करने से सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे हमारी बुद्धि का विकास होगा साथ ही साथ हमारे घरों में बहुत सारे छोटे-छोटे बच्चे मौजूद होते हैं, हमें अध्ययन करता हुआ देखकर उनके मन में भी अध्ययन की भावना जागृत होगी जिससे उनके अध्ययन करने की क्षमता का भी विकास होगा और उनकी स्मरण शक्ति बढ़ेगी; क्योंकि बच्चे वही कार्य करते हैं जो हम करते हैं। वह हमें ही देखकर सब कुछ सीखते हैं। अगर हम किताबों को पढने में रुचि दिखाएंगे तो वो भी किताबों से प्रेम करना सीख जाएंगे और पढ़ने वाले बच्चों के लिए यह बहुत जरूरी है कि वो किताबों से प्रेम करना सीख जाएं। आज की डिजिटल दुनिया में कहीं न कहीं हम किताबों से दूर हो गए हैं, तो जरूरी है कि हम किताबों से प्रेम करना सीख जाएं।

कुछ किताबें पढ़ने का मैं आप सभी को सुझाव दूंगी, आप इन्हें जरूर पढ़ें जैसे- Atomic habits, The secret, IKIGAI, Biography of Charles Darwin, Rich Dad poor Dad, The power of subconscious mind, Psychology of money, Osho's books, Think and go rich, the magic, Communication skill, Tao Te Ching आदि।

अंत में मैं बस यही कहना चाहूँगी कि हमें अपने घरों में मंदिर की तरह ही किताबों को भी एक स्थान जरुर देना चाहिए। धन्यवाद!

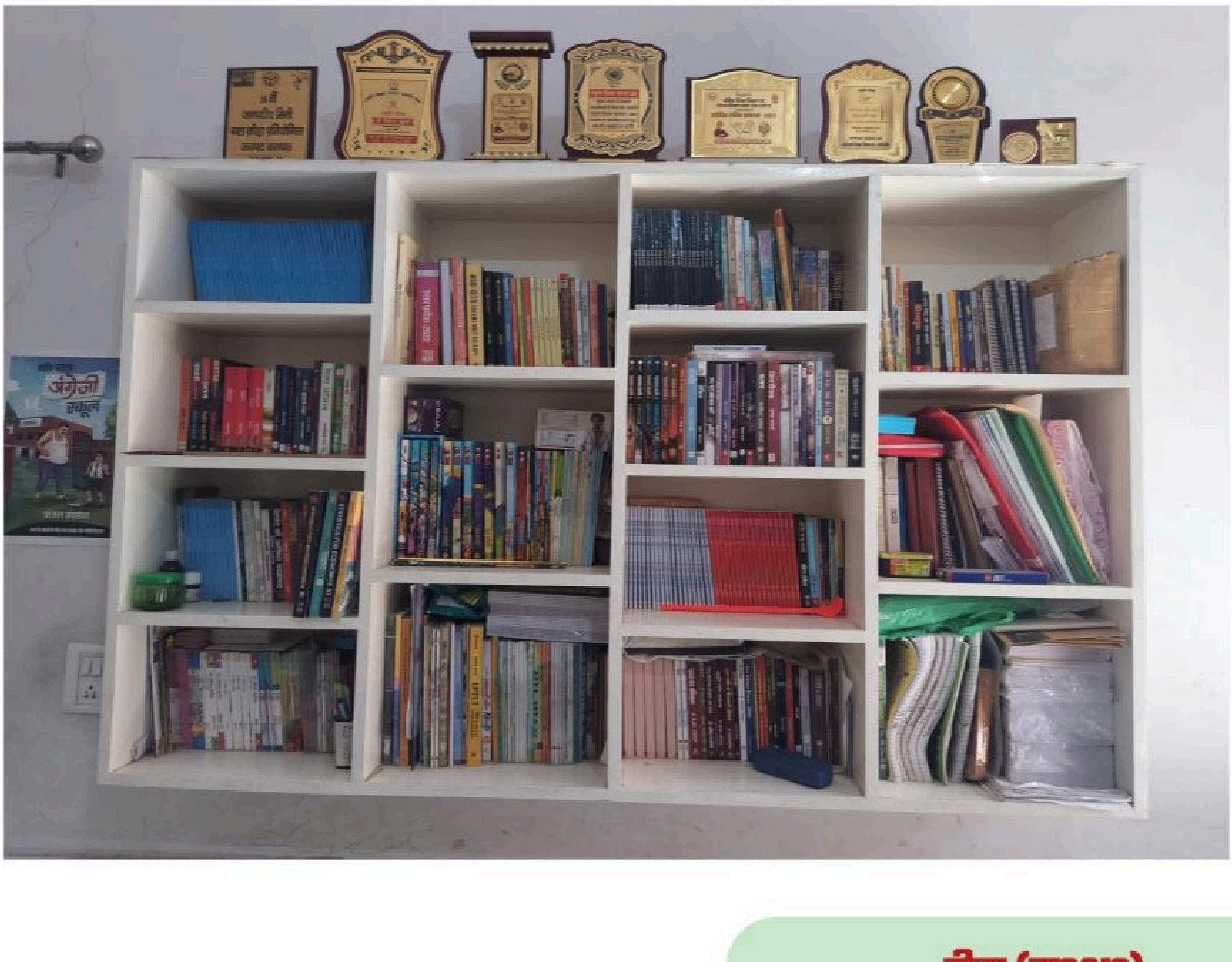

रीता (स०अ०)
उ० प्रा० वि० फतनपुर
विकास क्षेत्र- गौरा, जनपद- प्रतापगढ़

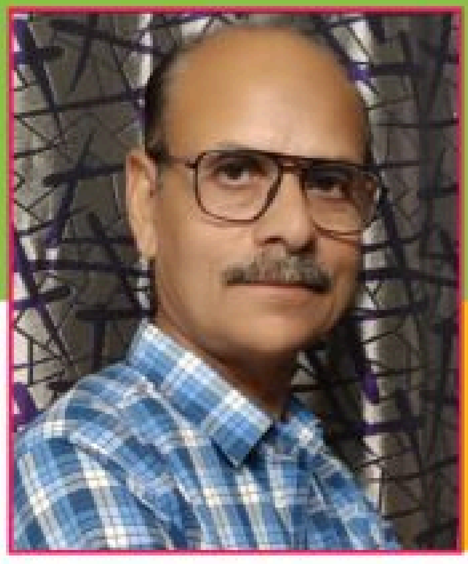

सम और विषम संख्याएँ

टी० एल० एम० का नाम- सम और विषम संख्याएँ
विषय - गणित
कक्षा - प्राथमिक स्तर
प्रयुक्त सामग्री - साड़ी का खाली डब्बा, मारकर कलर, कलर स्केच पेन, चार्ट पेपर, रंगीन टेप, फेविकोल, कैंची आदि।

बनाने की विधि - साड़ी का एक खाली डब्बा लेकर उसमें अंदर वाले बॉक्स के आकर का एक चार्ट पेपर काटकर चिपकाएंगे। उस चार्ट पेपर पर 1 से 100 तक संख्याएं ऊपर से नीचे की ओर लिखेंगे। एक दूसरे कलर का उसी आकर का चार्ट पेपर लेकर उसमें हॉरिजॉन्टल लाइन के आकार के स्लॉट इस प्रकार काटेंगे कि उस पेपर को संख्याओं के ऊपर रखने पर वह विषम संख्याओं को ढक ले और स्लॉट में से सम संख्याएं दिखाई देती रहें। अब इसी प्रकार दूसरा चार्ट पेपर लेकर उसके स्लॉट इस प्रकार काटेंगे कि उसे संख्याओं के ऊपर रखने पर वह सम संख्याओं को ढके तथा स्लॉट में से विषम संख्याएँ दिखाई दें। अब इन स्लॉट वाले पेपर के किनारों पर रंगीन टेप लगाकर टी० एल० एम० को अंतिम रूप देंगे। अब यह बच्चों को समझाने के लिए तैयार हो चुका है।

लाभ- बच्चे इस वर्किंग टी० एल० एम० की सहायता से सम और विषम संख्याओं की पहचान आसानी से कर पाएंगे।

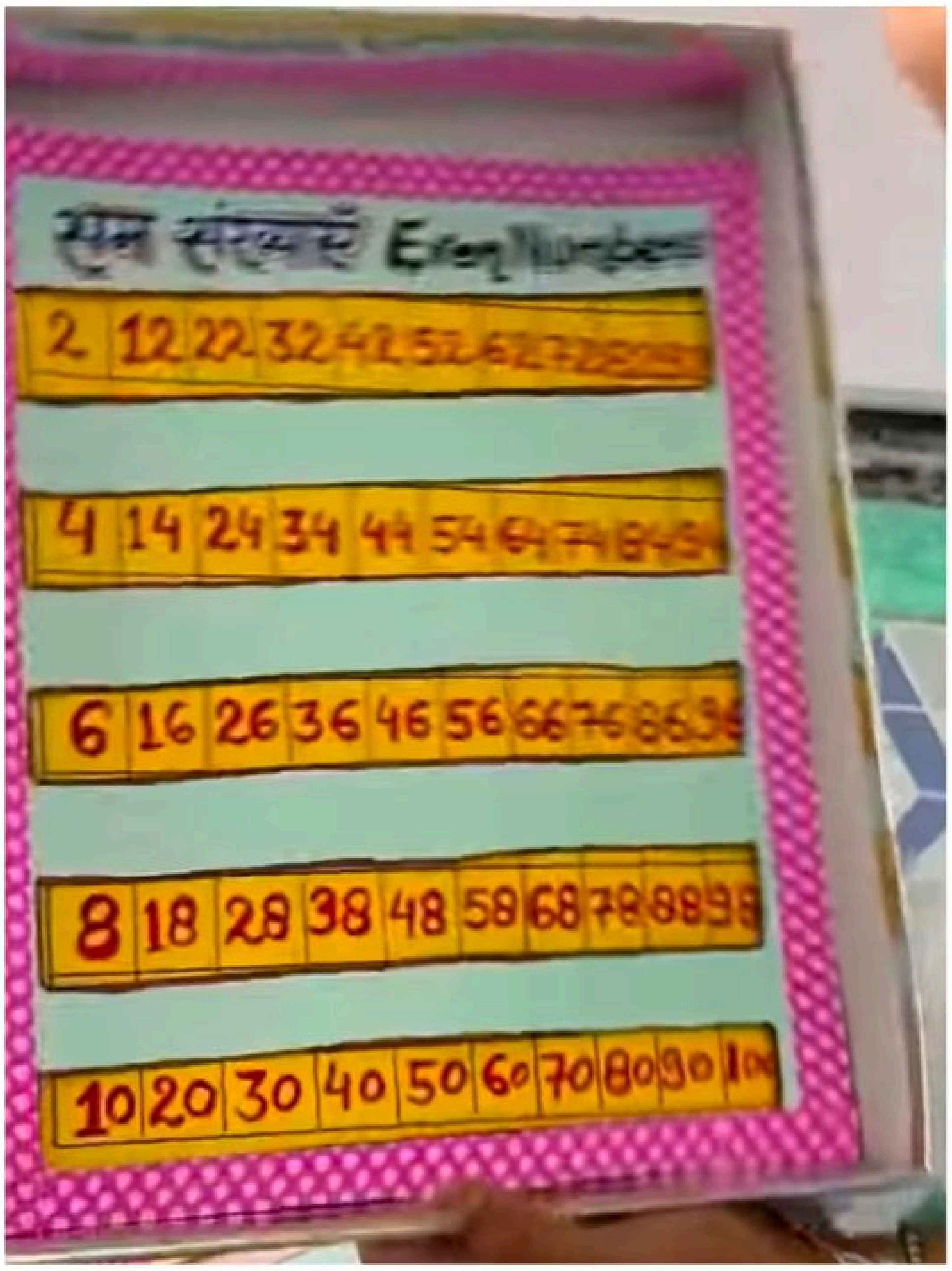

मौ० यामीन (स०अ०)
कम्पोज़िट उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ावद
बड़ौत, बागपत

कहानी के पात्रों का मॉडल

छात्र/छात्राओं की कक्षा 4 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक (एनसीईआरटी) की कहानी में आये पात्रों के मॉडल बनाकर पाठ को पढ़ाया और पात्रों के मॉडल से अभिनय द्वारा समझाया।

सामग्री :-

चार्ट पेपर, जूता, रंग, फेविकोल तथा थर्माकोल।

विधि :-

चार्ट पेपर पर पहले चित्र बनाकर रंगों द्वारा उसे सजाया। उसके बाद काटकर मिट्टी तथा थर्माकोल पर चिपकाया। कहानी के पात्रों का मॉडल बनाकर तैयार किया।

लाभ :-

① छात्रों/छात्राओं को कहानी पढ़ने और समझने में बहुत सहजता महसूस हुई।

② छात्रों/छात्राओं ने पाठ (कहानी) को रुचि लेकर पढ़ा और समझा।

शीबा ज़हीन (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय सकरबाबाद (1 से 8)
ब्लॉक- अकराबाद, जनपद- अलीगढ़

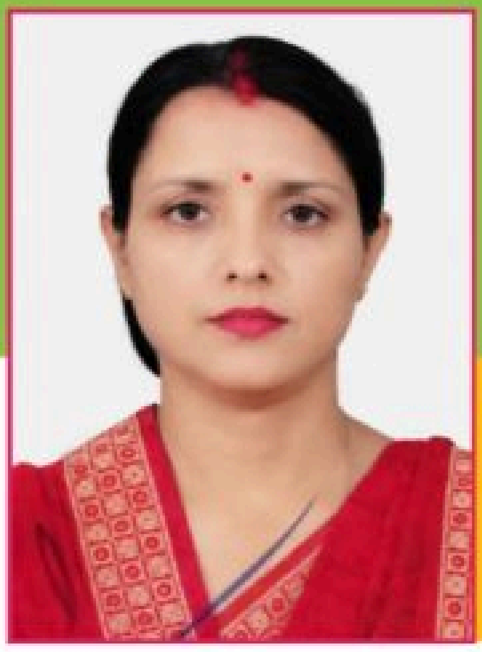

घर और नौकरी के बीच संतुलन बनाती महिला शिक्षक: संघर्ष, चुनौतियाँ और राह

भारतीय समाज में शिक्षण को महिलाओं के लिए सबसे 'उपयुक्त' और 'सुरक्षित' पेशा माना जाता है। अक्सर यह धारणा बना दी जाती है कि "शिक्षकों को हाफ-डे काम करना होता है, तो घर संभालना आसान है।" लेकिन इस तथाकथित सुविधा के पीछे छिपा संघर्ष अक्सर अनदेखा रह जाता है।

वास्तविकता यह है कि एक महिला शिक्षक के लिए घर और नौकरी का प्रबंधन करना दोहरे बोझ उठाने जैसा है, जहाँ उन्हें लगातार पारिवारिक उम्मीदों और व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन साधना पड़ता है।

प्रमुख चुनौतियाँ और संघर्ष :

दोहरी भूमिका और मानसिक तनाव-

महिला शिक्षक सुबह घर का सारा काम खाना बनाना, बच्चों को तैयार करना, बुजुर्गों की देखभाल निपटाकर स्कूल पहुँचती हैं। स्कूल में दिनभर बच्चों को पढ़ाना, अनुशासन बनाए रखना और कागजी कार्रवाई करना मानसिक रूप से थका देने वाला होता है। शाम को घर लौटने पर आराम करने के बजाय उनका 'दूसरा शिफ्ट' यानी घरेलू जिम्मेदारियाँ शुरू हो जाती हैं।

'आसान काम' मानने की सामाजिक मानसिकता-

समाज में यह गलतफहमी है कि शिक्षिका का काम केवल 5-6 घंटे पढ़ाना है। लोग यह भूल जाते हैं कि स्कूल की छुट्टी के बाद भी उनका काम खत्म नहीं होता—कॉपियां जांचना, लेसन प्लान तैयार करना, रिजल्ट शीट बनाना और अगले दिन की तैयारी जैसे काम उन्हें घर पर भी करने पड़ते हैं।

शिक्षिका बनाम माँ/पत्नी का संघर्ष-

दूसरों के बच्चों का भविष्य संवारने वाली शिक्षिका को कई बार अपने ही बच्चों के साथ समय न बिता पाने का मलाल रहता है। बच्चे के बीमार होने या उनकी अपनी परीक्षाओं के समय कार्यस्थल और परिवार में से किसी एक को प्राथमिकता देना उनके लिए बेहद आत्म-ग्लानि से भरा होता है।

कार्यस्थल की बदलती चुनौतियाँ-

आजकल शिक्षण का दायरा सिर्फ ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं है। डिजिटल टीचिंग, ऑनलाइन अटेंडेंस, प्रशासनिक काम, मूल्यांकन और बैठकों के कारण काम का दबाव काफी बढ़ गया है, जिससे उनका व्यक्तिगत जीवन बुरी तरह प्रभावित होता है।

स्वयं के स्वास्थ्य और मानसिक शांति की अनदेखी-
घर और स्कूल की अनवरत भागदौड़ में महिला शिक्षक अक्सर अपने स्वास्थ्य (शारीरिक और मानसिक) को सबसे पीछे रख देती हैं। अनिद्रा, तनाव, पीठ दर्द और थकावट उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन जाते हैं।

समाधान और सहयोग की आवश्यकता :
एक महिला शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज के भावी नागरिकों की निर्मात्री है। उनके इस अनवरत संघर्ष को कम करने के लिए बहुस्तरीय सहयोग की आवश्यकता है।

पारिवारिक सहयोग- घर के कामों और बच्चों की जिम्मेदारी केवल महिला की नहीं होनी चाहिए। परिवार के सदस्यों को काम में हाथ बँटाना होगा।

संस्थागत संवेदनशीलता- स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों को महिला शिक्षकों के प्रति संवेदनशील रवैया अपनाना चाहिए—जैसे कि समय पर छुट्टियाँ देना, चाइल्ड केयर की सुविधा और बेवजह के प्रशासनिक बोझ से राहत।

मानसिकता में बदलाव- समाज को शिक्षण के पेशे की गंभीरता को समझना होगा और इस मिथक को तोड़ना होगा कि यह एक "सरल या पार्ट-टाइम नौकरी" है।

निष्कर्ष : महिला शिक्षक जिस धैर्य और निष्ठा के साथ एक तरफ अपने परिवार को संभालती हैं और दूसरी तरफ अनगिनत बच्चों के भविष्य को नया आकार देती हैं, वह वंदनीय है। उनके इस निस्वार्थ संघर्ष को केवल सम्मान की नहीं, बल्कि व्यावहारिक सहयोग और समझ की सबसे ज्यादा जरूरत है।

दीपमाला यादव (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय हाथवंत-2
विकास खण्ड- खैरगढ़, जनपद- फिरोजाबाद

Transforming Rural Education

The Journey of P.S. Civil Lines (Dabrai), Firozabad

A significant transformation in basic education has taken shape through the English medium initiative under the Basic Education Department. While dedicated teachers across government schools have continually worked to foster a positive outlook toward free primary education, competing with private institutions on language proficiency remained a persistent hurdle.

When our school transitioned to an English medium model, we viewed it not merely as a change in curriculum, but as an opportunity to prove that strong willpower and a clear strategy can bridge any gap. Teaching children from rural backgrounds where parents often have limited literacy and siblings study in Hindi medium schools required a fundamental shift in our approach. I transitioned from being a traditional lecturer to a facilitator and role model, celebrating every small milestone to build our students' confidence.

Revamping the Campus Infrastructure :

To create an environment where children feel excited to learn, we undertook a complete overhaul of the school's physical premises:

Green Campus :

Transformed the dry schoolyard into a lush, eco-friendly campus through extensive tree plantation drives.

"Swachchta Express" Theme :

Replaced standard school walls with a creative train-themed paint scheme ("Swachchta Express"), making the building inviting and vibrant.

Classroom TLM Art :

Covered classroom walls with rich, interactive Teaching-Learning Materials (TLMs) including phonics, numbers, and days of the week.

Sanitation & Clean Water :

Collaborated with the local Gram Pradhan to upgrade toilet facilities and coordinated with the Gram Panchayat Secretary to replace standard hand pumps with a motorized submersible system and clean drinking water taps.

Innovative Pedagogy & Technology Integration :

Shifting from Hindi to English medium posed a unique pedagogical challenge, particularly for students in Classes 4 and 5. To address this, we developed innovative teaching routines.

__Assembly Based Language Drills :__

Began teaching foundational phonics and sight words (e.g., BAT, CAT) during morning assemblies using dedicated TLMs.

__Convent School Conversation Modules :__

Sourced conversation material from convent schools to conduct targeted speaking activities and daily English dialogue practice.

__Blackboard Centric Reading :__

Teachers wrote entire lessons onto blackboards to focus the collective attention of the classroom, improving reading stamina and textual comprehension.

__Bilingual News Reading :__

Introduced daily Hindi and English newspaper headline reading sessions led by students during assembly.

__Smart Classroom Tools :__

Integrated laptops and projectors to display interactive geography maps via Google Earth, utilized E-Slates for handwriting practice, and incorporated QR-code-enabled digital lessons through the DIKSHA app.

__Student Identity :__

Provided backpacks, ties, belts, and identity cards to foster pride, discipline, and a sense of belonging.

Excellence in Sports & Competitions :

Beyond academics, our students have achieved remarkable growth in co-curricular activities, debates, writing competitions, and sports.

(Key Highlights: Ragini (Class 5) secured Gold in the 100m race, and Shivani (Class 4) won Gold in District-level Badminton.)

The Outcome Soaring Enrollment and Recognition :

The impact of these initiatives became evident when parents began witnessing their children converse fluently in English. Impressed by the progress, local families started withdrawing their children from fee-charging private institutions to enroll them in our school. As a result, student enrollment rose dramatically from 55 to 256 (and subsequently crossed 300). The demand for admissions grew so high that administrative officials began receiving requests to secure seats for local children.

Key Accolades & Milestones :

There are two State Awardee Teachers in my school.

Ranked among the Top 30 Schools in Uttar Pradesh.

Awarded the State Level ICT Award by Dr. Sarvendra Vikram Singh (Director of Basic Education) and Ruby Singh (Secretary of Basic Education).

Commended for pedagogical innovation at State Level Seminars in Lalitpur, Lucknow and Siddharth Nagar.

Recognized under the Clean India Mission by the District Magistrate, CDO, and BSA, Firozabad.

Bestowed the Best Teacher Award by the Rotary Club of Firozabad on Teacher's Day.

Our experience demonstrates that with purpose-driven leadership, modern teaching aids, and a supportive learning environment, government schools can set new benchmarks in quality education.

Afzal Ahmad (A.T.)
Primary School Civil Lines (Dabrai)
Block & District- Firozabad

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप का जीवन स्वाभिमान, देशभक्ति, संघर्ष और उच्च नैतिक मूल्यों की मिसाल है। उनके जीवन के कुछ प्रमुख प्रेरक प्रसंग इस प्रकार हैं:-

1. दो तलवारें और युद्ध के नियम (शत्रु के प्रति भी धर्म का पालन) :

हल्दीघाटी के युद्ध से पहले महाराणा प्रताप के पास एक बहलोल खान नाम का मुगल सेनापति भेजा गया। युद्ध के दौरान जब वह आमने-सामने आए, तो प्रताप ने देखा कि खान के पास तलवार नहीं थी या उसकी तलवार छूट गई थी। युद्ध का नियम था कि निहत्थे पर वार नहीं किया जाता।

महाराणा प्रताप हमेशा अपने पास दो तलवारें रखते थे। जब लोगों ने पूछा कि आप दो तलवारें क्यों रखते हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया: "एक तलवार मेरे स्वयं के लिए है और दूसरी उस निहत्थे शत्रु के लिए, ताकि युद्ध हमेशा बराबरी का हो।" यह प्रसंग सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने धर्म और आदर्शों का त्याग नहीं करना चाहिए।

2. चेतक की स्वामिभक्ति और अंतिम छलांग :

हल्दीघाटी के भयानक युद्ध में महाराणा प्रताप गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उनका प्रिय घोड़ा चेतक भी बुरी तरह ज़ख्मी हो चुका था, फिर भी उसने महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए अपनी जान बाजी पर लगा दी। मार्ग में एक 21 फीट चौड़ा बरसाती नाला आया, जिसे पार करना किसी भी सामान्य घोड़े के लिए असंभव था। घायल चेतक ने एक ही छलांग में उस नाले को पार कर लिया और महाराणा को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर अपने प्राण त्याग दिए। महाराणा प्रताप एक वीर योद्धा होने के साथ-साथ अत्यंत सहृदय थे; अपने निष्ठावान घोड़े की मृत्यु पर वे फूट-फूटकर रोए थे।

3. भामाशाह का महान त्याग (निस्वार्थ राष्ट्रसेवा) :

मुगलों से लगातार युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप का राजकोष समाप्त हो चुका था। वे जंगलों में भटक रहे थे और सेना के पुनर्गठन के लिए उनके पास धन नहीं था।

ऐसे समय में मेवाड़ के दानवीर भामाशाह आगे आए। उन्होंने अपनी पीढ़ियों से संचित संपूर्ण निजी संपत्ति (लगभग 25 लाख रुपये और 20,000 अशर्फियाँ) महाराणा प्रताप के चरणों में समर्पित कर दी। यह संपत्ति इतनी विशाल थी कि 25,000 सैनिकों का खर्च 12 वर्षों तक उठाया जा सकता था। इस धन की मदद से महाराणा ने पुनः सेना संगठित की और मेवाड़ के अधिकांश हिस्सों को मुगलों से वापस मुक्त कराया।

4. घास की रोटी और स्वाभिमान की रक्षा :

अकबर की विशाल सेना से घिरे रहने के कारण महाराणा प्रताप को अपने परिवार के साथ अरावली की पहाड़ियों

और जंगलों में शरण लेनी पड़ी। कई बार उन्हें और उनके बच्चों को भूखे सोना पड़ता था।

एक प्रसिद्ध प्रसंग के अनुसार, एक बार महाराणा की पुत्री के लिए घास की रोटी बनाई गई थी, जिसे एक जंगली बिलाव छीनकर भाग गया। अपनी भूखी बच्ची को रोता देख महाराणा का हृदय पसीज गया और उनके मन में क्षण भर के लिए संधि का विचार आया। लेकिन जैसे ही उन्हें मेवाड़ की स्वतंत्रता और अपने स्वाभिमान का ध्यान आया, उन्होंने तुरंत उस विचार को त्याग दिया और घास की रोटियाँ खाकर भी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की।

जीवन सीख : महाराणा प्रताप का जीवन यह संदेश देता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, अपने स्वाभिमान, सिद्धांतों और मातृभूमि के प्रति समर्पण से कभी समझौता नहीं करना चाहिए।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स0अ0)
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन
भदोही

Bhagat Singh

The Power of Courage and Ideas

Bhagat Singh was not only a courageous freedom fighter but also a young thinker who believed in knowledge, justice and social responsibility. At a very young age, he dedicated himself to the dream of a free India.

His life teaches us that true courage is not merely facing difficulties; it is also the courage to think independently, question injustice and stand for what is right. He had a deep interest in reading and believed that awareness and ideas could bring meaningful change to society.

For teachers and students, Bhagat Singh's life carries a valuable lesson : Education should not only make us knowledgeable but also develop responsible, thoughtful and courageous citizens.

His legacy continues to inspire young minds to learn, think and contribute positively to society.

Let us remember Bhagat Singh not only by his name, but by embracing his values of courage, knowledge, patriotism and responsibility.

Poonam Rani (A.T.)
P. S. Budhera
Block: Baghpat, District: Baghpat

ज्ञानदीप QR ई-लर्निंग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को डजिटल शिक्षा से जोड़ने का काम प्रारम्भ कर दिया गया है। बेसिक शिक्षा विभाग में इस मुहिम को आगे बढ़ाते हुए कम्पोजिट विद्यालय अमौली शिक्षा क्षेत्र अमौली, जनपद फतेहपुर में अध्यापिका प्रतिमा उमराव ने कक्षा-कक्ष में डिजिटल नवाचार की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए विद्यालय में "ज्ञानदीप QR ई-लर्निंग" पहल को सफलतापूर्वक लागू किया है। इस अनोखी पहल के तहत पर्यावरण के प्रति जुड़ाव करते हुए पेड़-पौधों, प्रत्येक पाठ, चित्र और गतिविधि के साथ एक QR कोड जोड़ा गया है। जो स्वयं शिक्षिका द्वारा बनाए गए हैं, जिसे स्कैन करते ही विद्यार्थी तुरन्त वीडियो, ऑडियो, प्रश्नोत्तरी और अतिरिक्त अध्ययन सामग्री यूट्यूब चैनल, फेसबुक पेज तक पहुँच सकते हैं। शिक्षिका ने कक्षा 8 की हिंदी प्रज्ञा विषय के समस्त पाठों को काव्यरूप में रूपांतरित कर इमेज रूप में बदलकर फिर क्यू आर कोड तैयार किया है। जिसे स्कैन कर बच्चे आसानी निर्धारित पाठ को कविता के रूप मैं पढ़ते हैं और एक स्थाई ज्ञान प्राप्त करते हैं।

विद्यालय की शिक्षिका ने बताया कि इस तकनीक से बच्चों की रुचि और भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। अब विद्यार्थी सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि QR कोड के माध्यम से वे विषय की गहराई तक पहुँच रहे हैं। इस नवाचार का मुख्य उद्देश्य यह भी है कि एक साथ कई विद्यार्थी अलग-अलग मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करते हैं जिससे समय की बचत होती है और एक साथ कई बच्चों को सीखने का अवसर प्राप्त होता है। क्यू आर कोड में दी गई जानकारी को एक दूसरे से साझा करते हैं। कक्षा-कक्ष में बच्चो की उपस्थिति भी बढ़ी है।

शिक्षिका प्रतिमा उमराव ने कहा, "ज्ञानदीप ई-लर्निंग ने शिक्षा को अधिक सजीव, रोचक और व्यावहारिक बना दिया है। यह हमारे बच्चों को डिजिटल युग के अनुरूप तैयार कर रहा है।" विद्यार्थियों ने भी बताया कि QR कोड से पढ़ाई करना उन्हें अधिक आसान, मज़ेदार और यादगार लग रहा है। कक्षा-कक्ष में क्यू आर कोड लगा देने से स्कैन करना एक गतिविधि बन गया है जिसमें कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को शामिल होने का अवसर प्राप्त होता है। कुछ छात्राएं भी क्यू आर कोड जनरेट कर लेती हैं।

ज्ञानदीप QR ई-लर्निंग की यह पहल शिक्षा में तकनीकी समावेशन का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरी है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया और अधिक प्रभावी और आकर्षक बन गई है। तकनीकी ज्ञान से बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। सभी अधिकारियों और शिक्षकों ने इस नवाचार की सराहना की है।

प्रतिमा उमराव (स0अ0)
कम्पोज़िट विद्यालय अमौली
अमौली-फ़तेहपुर

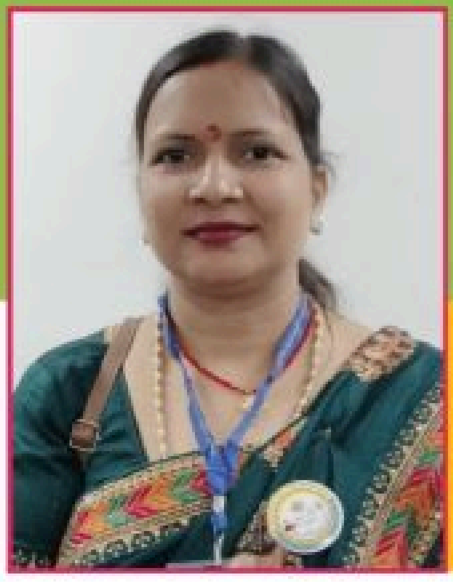

नैतिक आचरण

प्यारे बच्चो! कर्म के पथ पर,
तुम सदा आगे को बढ़ना।
मिलेगी मंजिल निश्चय तुमको,
तुम राहों में न भटकना।।

हृदय में रखना ईश्वर को,
नेकी सदा तुम करना।
छल, कपट और झूठ से,
बच्चो तुम नाता न रखना।।

माता-पिता और बड़ों की,
सदा सच्ची सेवा करना।
मुश्किल में हो जो कोई,
सदा मदद को आगे बढ़ना।।

नैतिकता की राह पर चलना,
सदाचार तुम अपनाना।
बड़ों का आशीर्वाद लेकर,
मंजिल को अपनी पाना।।

सारे धर्मों का सार यही है,
मानवता को अपनाना।
विनम्रता धारण करके मन में,
अपने व्यक्तित्व को महान बनाना।।

मृदुला वर्मा (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

लोहे के स्तंभ की अद्भुत कहानी

नानी ने पान चबाते हुए कहा, लो सुनो, आज तुम्हें एक अजीब कहानी सुनाती हूँ—लोहे के उस स्तंभ की कहानी जो उम्र में मुझसे भी बहुत पुराना है, लेकिन आज तक कोई इसकी पूरी सच्चाई नहीं जान सका। तुम यह तो जानते ही हो कि हमारे देश भारत में अजंता-एलोरा की गुफाएँ, ताजमहल और कुतुबमीनार जैसी अद्भुत ऐतिहासिक धरोहरें हैं। ये स्मारक पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं, लेकिन इनके अलावा भी भारत में ऐसे कई अनोखे आश्चर्य हैं जो आज भी लोगों को हैरान कर देते हैं।

अभी तुम बच्चे हो। कुछ बड़े हो जाओ तो अपनी मम्मी-पापा के साथ भारत की राजधानी नई दिल्ली घूमने जाना। फिर पुरानी दिल्ली की ओर बढ़ते हुए महरौली और कुतुबमीनार के पास जाना। वहाँ तुम्हें एक लोहे का स्तंभ बड़े गौरव के साथ खड़ा दिखाई देगा। यह स्तंभ भी दुनिया के आश्चर्यों से कम नहीं है।

समझदार नानी थोड़ी देर के लिए रुकीं। उन्होंने पान की पीक थूकने के लिए उगालदान संभाला और फिर बोलीं, हाँ तो मैं कह रही थी कि जिस शान और मजबूती के साथ यह लोहे का स्तंभ खड़ा है, वह अपने आप में एक अद्भुत उदाहरण है। तुममें से शायद अभी किसी की उम्र 16 वर्ष भी नहीं होगी, लेकिन यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि लोहे का यह अनोखा स्तंभ लगभग 1600 वर्षों से खुले आसमान के नीचे उसी तरह खड़ा है।

इस दौरान इस स्तंभ ने हर मौसम की मार झेली है। तेज धूप, वर्षा, आँधी और तूफान सब कुछ सहा है, लेकिन इसके बावजूद इसमें आज तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। न इसका वजन कम हुआ और न ही पर्यावरणीय प्रदूषण इसे गंभीर नुकसान पहुँचा सका। तुम सोचोगे कि आखिर इसे किसने और कैसे बनाया होगा? इसका रहस्य आज भी पूरी तरह सामने नहीं आ सका है।

लगभग 1600 वर्ष पहले आज की तरह बड़े-बड़े कारखाने और आधुनिक मशीनें नहीं थीं। फिर भी उस समय इतनी विशाल लोहे की संरचना तैयार कर दी गई। इससे यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन भारत में धातु विज्ञान का ज्ञान अत्यंत विकसित था। इस लोहे के स्तंभ का व्यास लगभग 16 इंच, ऊँचाई करीब 23 फीट और वजन लगभग छह टन बताया जाता है।

अब तुम पूछोगे कि यह स्तंभ कब बना, किसने बनवाया और इसका उद्देश्य क्या था? इसकी भी एक रोचक ऐतिहासिक कहानी है। इतिहासकारों के अनुसार यह गुप्तकाल की महत्वपूर्ण स्मृति है। माना जाता है कि इसका निर्माण कुमारगुप्त प्रथम के समय हुआ था। स्तंभ पर गुप्तकालीन लिपि में संस्कृत का एक अभिलेख उत्कीर्ण है, जिससे चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

लोहे के स्तंभ पर उत्कीर्ण संस्कृत अभिलेख का हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद कराकर संगमरमर की पट्टिकाओं पर लिखवाया गया और उसे पास की दीवार पर लगाया गया, ताकि लोग इस ऐतिहासिक अभिलेख को समझ सकें। बताया जाता है कि पंडित बांके राम तुला गोस्वामी ने वर्ष 1903 में इस कार्य को पूरा किया था। इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों के लिए यह अभिलेख किसी अनमोल उपहार से कम नहीं है।

तुम पूछोगे कि आखिर इस स्तंभ पर लिखा क्या है? तो सुनो, स्तंभ पर उत्कीर्ण संस्कृत अभिलेख का हिंदी भावार्थ कुछ इस प्रकार है– जिस राजा की भुजा पर खंग ने कीर्ति अंकित की, जिसने युद्ध में एकत्र हुए शत्रुओं को अपने पराक्रम से पराजित किया, जिसने युद्ध के दौरान सिंधु नदी की सात धाराओं को पार कर विजय प्राप्त की, जिसके पराक्रम से आज भी दक्षिण समुद्र की हवाएँ सुगंधित होती हैं; वह महान राजा मानो शरीर त्यागकर दूसरे लोक में चला गया और अपने कर्मों से प्राप्त स्वर्ग में निवास कर रहा है, लेकिन अपनी कीर्ति के कारण आज भी इस धरती पर विद्यमान है।

उसने अपने भुजबल से चिरकाल तक चक्रवर्ती राज्य प्राप्त किया। उसका नाम चंद्र था और उसका मुख पूर्णिमा के चंद्रमा के समान सुंदर था। इस राजा ने भक्ति के साथ अपना मन भगवान विष्णु में लगाया और विष्णुपद पर्वत पर भगवान विष्णु का ऊँचा ध्वज स्थापित कराया।

इतना पढ़कर नानी ने कागज को तह किया और फिर हमसे बोलीं, तुमने सुना, जिसका नाम चंद्र बताया गया है, उससे आशय चंद्रगुप्त विक्रमादित्य से माना जाता है। इसी कारण इस स्तंभ को चंद्र का लौह स्तंभ भी कहा जाता है।

आज भी देश-विदेश से आने वाले पर्यटक इस अद्भुत लोहे के स्तंभ को आश्चर्य और कौतूहल से देखते हैं। इसके बारे में एक लोकप्रिय मान्यता यह भी है कि यदि कोई व्यक्ति स्तंभ से अपनी पीठ सटाकर दोनों हाथ पीछे की ओर ले जाकर उसे घेरने में सफल हो जाए, तो यह उसके लिए शुभ संकेत माना जाता है। इतिहास, विज्ञान और प्राचीन भारतीय धातु-कौशल का यह अनोखा संगम आज भी लोगों को आश्चर्यचकित करता है।

ज़हीन अहमद (स0अ0)
पी0 एम0 श्री स्कूल पाड़म
ब्लॉक- एका, जनपद- फ़िरोज़ाबाद

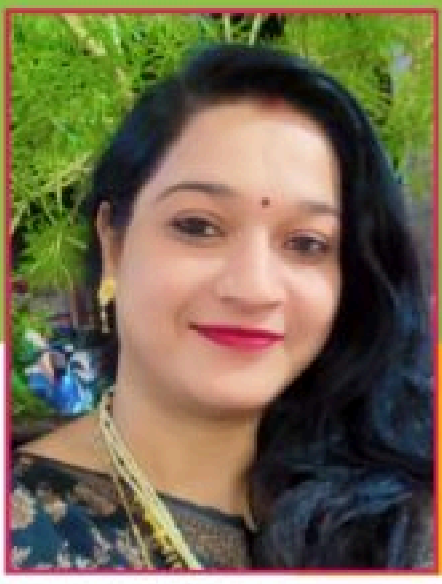

विलयन

विषय- विज्ञान

लर्निंग आउटकम- विलेय, विलायक, विलयन और अविलायक की जानकारी।

सामग्री- एक गिलास पानी, रेत, बालू और एक चम्मच।

गतिविधि- सर्वप्रथम बच्चों द्वारा नमक को पानी में डालकर घोला गया, जिससे नमक पूरी तरह पानी में घुल गया। बाद में रेत डालकर घोला गया, लेकिन रेत घुलने की बजाय बर्तन की तली में बैठ गया।

इस गतिविधि के बाद बच्चों को बताया गया कि जिसे घोलना है (नमक और रेत) वो विलेय पदार्थ कहलाता है, जिसमें घोलना है (पानी) उसे विलायक कहते हैं, जो घोल तैयार हुआ (नमक-पानी का घोल) उसे विलयन कहते हैं और जो नहीं घुला (रेत) उसे अविलायक पदार्थ कहते हैं।

इस गतिविधि के पश्चात बच्चे अच्छे से इन चारों चीजों में फर्क समझ पाते हैं।

दिव्या पूरी (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय पल्टा
चिलकहर- बलिया

बुद्ध पूर्णिमा

बुद्ध पूर्णिमा भारत की महान आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इसे वैशाख पूर्णिमा भी कहा जाता है। यह दिन भगवान बुद्ध के जीवन की तीन महत्वपूर्ण घटनाओं—जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण से जुड़ा माना जाता है। भगवान बुद्ध ने संसार को शांति, करुणा, अहिंसा, सत्य और मानवता का संदेश दिया। उनके विचार आज भी पूरे विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। भगवान बुद्ध का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व लुंबिनी में हुआ माना जाता है, जो वर्तमान नेपाल में स्थित है। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ गौतम था। उनके पिता शुद्धोधन शाक्य गण के प्रमुख थे और माता का नाम महामाया था। सिद्धार्थ का पालन-पोषण राजसी वातावरण में हुआ, लेकिन उनका मन सांसारिक सुख-सुविधाओं में अधिक समय तक नहीं लगा।

ज्ञान की प्राप्ति :

सिद्धार्थ गौतम ने कई वर्षों तक कठोर साधना और ध्यान किया। अंततः बिहार के बोधगया में पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के बाद वे 'बुद्ध' कहलाए, जिसका अर्थ है जाग्रत या ज्ञान प्राप्त व्यक्ति। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, वह आज बोधि वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है।

बुद्ध की शिक्षाएँ :

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को दुखों से मुक्ति का मार्ग दिखाना था। उन्होंने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया—

1. संसार में दुःख है।
2. दुःख का कारण तृष्णा और आसक्ति है।
3. तृष्णा का अंत होने पर दुःख का अंत संभव है।
4. दुःख से मुक्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग अपनाना चाहिए।

अष्टांगिक मार्ग में सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाणी, कर्म, आजीविका, प्रयास, स्मृति और समाधि शामिल हैं। बुद्ध ने मध्यम मार्ग अपनाने पर भी बल दिया। उनका विचार था कि न तो अत्यधिक भोग-विलास उचित है और न ही अत्यधिक कठोर तपस्या। संयमित और संतुलित जीवन ही कल्याण का मार्ग है। भगवान बुद्ध ने सभी जीवों के प्रति करुणा, दया और अहिंसा का भाव रखने की शिक्षा दी। उन्होंने जाति, ऊँच-नीच और भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता को महत्व दिया। उनका संदेश था कि मनुष्य अपने विचारों और कर्मों को शुद्ध करके अपने जीवन को बेहतर बना सकता है।

बुद्ध पूर्णिमा का महत्व :

बुद्ध पूर्णिमा वैशाख मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए यह अत्यंत पवित्र दिन है।

इस अवसर पर बौद्ध मंदिरों और विहारों में विशेष प्रार्थना, ध्यान, पूजा तथा धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग जरूरतमंदों की सहायता करते हैं, भोजन और वस्त्र का दान करते हैं तथा अहिंसा और करुणा का संकल्प लेते हैं।

भारत में बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर और लुंबिनी जैसे बौद्ध तीर्थस्थलों का विशेष महत्व है। सारनाथ में बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था, जबकि कुशीनगर में उनके महापरिनिर्वाण से जुड़ी परंपरा है।

आधुनिक जीवन में बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता :

आज की दुनिया में तनाव, हिंसा, असहिष्णुता और आपसी संघर्ष जैसी अनेक समस्याएँ दिखाई देती हैं। ऐसे समय में भगवान बुद्ध के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनका शांति, संयम, करुणा, अहिंसा और आत्मचिंतन का संदेश व्यक्ति और समाज दोनों के लिए उपयोगी है।

यदि मनुष्य अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखे, दूसरों के प्रति दया और सम्मान का भाव रखे तथा क्रोध और द्वेष से दूर रहे, तो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में शांति स्थापित की जा सकती है।

बुद्ध पूर्णिमा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि मानवता, शांति और आत्मज्ञान का संदेश देने वाला पर्व है। भगवान बुद्ध ने अपने जीवन और उपदेशों के माध्यम से यह बताया कि सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि मन की शांति और सदाचार में है। बुद्ध पूर्णिमा हमें सत्य, अहिंसा, करुणा और सद्भाव के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इसलिए हमें इस पावन अवसर पर बुद्ध के विचारों को अपने जीवन में अपनाने और समाज में शांति तथा मानवता की भावना को मजबूत करने का संकल्प लेना चाहिए।

रविन्द्र कुमार पटेल (स0अ0)
पी0 एम0 श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि0 ख0- औराई, जनपद- भदोही

खेलों का महत्व

बेसिक शिक्षा के बच्चों के लिए खेल का महत्व, उपयोगिता और लाभ :

खेल बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग है। बेसिक शिक्षा के स्तर पर खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालय में पढ़ाई के साथ खेलों को उचित स्थान देने से बच्चों में सीखने के प्रति रुचि बढ़ती है और उनका सर्वांगीण विकास होता है।

खेल बच्चों के शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दौड़ना, कूदना, रस्सी कूदना, कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, क्रिकेट तथा विभिन्न प्रकार के व्यायाम बच्चों की मांसपेशियों को मजबूत बनाते हैं। नियमित खेल-कूद से शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, मोटापा कम होता है और बच्चों की कार्यक्षमता बढ़ती है। स्वस्थ शरीर बच्चों को कक्षा में अधिक सक्रिय रहने में भी सहायता करता है।

खेलों का मानसिक और बौद्धिक विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। खेलों में बच्चों को परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेना, समस्या का समाधान करना और रणनीति बनाना पड़ता है। इससे उनकी एकाग्रता, स्मरण शक्ति, तर्कशक्ति तथा रचनात्मक सोच का विकास होता है। खेल के माध्यम से सीखने पर कठिन विषयों को भी रोचक एवं सरल बनाया जा सकता है। गणित, भाषा और पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों में खेल-आधारित गतिविधियाँ बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती हैं।

खेल बच्चों में सामाजिक एवं भावनात्मक गुणों का विकास भी करते हैं। सामूहिक खेलों के माध्यम से बच्चे सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व, सहनशीलता और आपसी सम्मान सीखते हैं। जीत में विनम्र रहना और हार को स्वीकार करके पुनः प्रयास करना उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करना सिखाता है। खेल बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और उनमें टीम भावना विकसित करते हैं।

विद्यालयों में खेलों की उपयोगिता इसलिए भी अधिक है क्योंकि इनके माध्यम से स्थानीय एवं कम लागत वाली सामग्री का उपयोग करके प्रभावी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं। सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी कबड्डी, खो-खो, दौड़, रस्सी कूद, गेंद के खेल, योग और स्थानीय पारंपरिक खेल आसानी से कराए जा सकते हैं। इससे प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।

आज के समय में बच्चों का स्क्रीन और मोबाइल की ओर बढ़ता आकर्षण भी एक चुनौती है। नियमित खेल-कूद उन्हें सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है और शारीरिक निष्क्रियता को कम करता है। इसलिए विद्यालय, शिक्षक और अभिभावक सभी को बच्चों के दैनिक जीवन में खेलों को पर्याप्त स्थान देना चाहिए।

अतः खेल शिक्षा का अतिरिक्त हिस्सा नहीं, बल्कि समग्र शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार हैं। बेसिक शिक्षा में खेलों का समुचित समावेश बच्चों को स्वस्थ, अनुशासित, आत्मविश्वासी, रचनात्मक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक है। कहा जा सकता है कि "खेलेंगे बच्चे, तभी खिलेंगे बच्चे"– इस भावना को अपनाकर विद्यालयों में खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है।

बबलू सोनी (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय उतरार
बाबागंज-प्रतापगढ़

द ग्रेट ग्रैंड सुपर हीरो

भारतीय सिनेमा को अस्तित्व में आए 112 वर्ष से अधिक का समय बीत चुका है, लेकिन बच्चों के लिए बनाई जाने वाली फिल्मों के क्षेत्र में आज भी गिनी-चुनी फिल्में ही सामने आती हैं। पिछले वर्ष रिलीज हुई फिल्म 'चिड़िया' के बाद अब 'द ग्रेट ग्रैंड सुपर हीरो : एलियंस का अलार्म' बच्चों को केंद्र में रखकर बनाई गई एक और फिल्म के रूप में सिनेमाघरों में आई है। जैकी श्रॉफ की मौजूदगी इस फिल्म को विशेष बनाती है और इसकी रिलीज एक सुखद अनुभव का एहसास कराती है। हालांकि फिल्म की फैंटेसी कुछ स्थानों पर बच्चों जैसी और अपेक्षाकृत सरल लगती है, लेकिन जैकी श्रॉफ जैसे अनुभवी और स्वाभाविक अभिनेता का अभिनय तथा बाल कलाकारों का सच्चा प्रदर्शन इसे रोचक और मनोरंजक बना देता है।

फिल्म की कहानी दीपू (मिहिर गोडबोले) और उसके दादा जगदीश चंद्र (जैकी श्रॉफ) के इर्द-गिर्द घूमती है। पिता के तबादले के बाद जब दीपू एक नए स्कूल में प्रवेश लेता है तो उसे नए दोस्त बनाने और स्वयं को सबसे अलग साबित करने की चिंता सताने लगती है। इसी प्रयास में वह अपने सहपाठियों से दावा कर बैठता है कि उसके दादा कोई साधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि ऐसे सुपर हीरो हैं जो पृथ्वी को एलियंस के हमलों से बचाते हैं।

दीपू केवल इतना ही नहीं कहता, बल्कि यह भी बताता है कि यदि इस रहस्य को अठारह वर्ष से अधिक आयु के किसी व्यक्ति को बता दिया जाए तो उसके दादा अपनी सारी सुपर शक्तियाँ खो देंगे। उसका नया मित्र लड्डू (शिवांग चौरगे) इस बात पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेता है, जबकि चाणक्य (जहान जितेंद्र होडार) को इस दावे पर संदेह बना रहता है। दूसरी ओर, जो दादा एक छिपकली से भी डर जाते हैं, उनकी वास्तविकता छिपाने के लिए दादा और पोता तरह-तरह की योजनाएँ बनाते रहते हैं।

कहानी में असली मोड़ तब आता है जब सचमुच दो एलियंस (सौरभ शुक्ला और कुमार सौरभ) पृथ्वी पर आ पहुँचते हैं। वे चेतावनी देते हैं कि एलियंस की एक विशाल सेना पृथ्वी पर कब्जा करने के लिए आने वाली है। अब सभी की उम्मीदें जगदीश चंद्र पर टिक जाती हैं, जबकि वह मधुमेह, कमर दर्द और कमजोर हड्डियों जैसी उम्र संबंधी सामान्य परेशानियों से जूझ रहे एक साधारण बुजुर्ग हैं।

अब सवाल यह है कि क्या जगदीश चंद्र वास्तव में कोई सुपर हीरो हैं या यह केवल बच्चों की कल्पना का परिणाम है? और यदि एलियंस हमला कर दें तो क्या वे पृथ्वी को बचा पाएंगे? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए फिल्म देखनी होगी।

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता गुजराती फिल्म निर्माता मनीष सैनी की यह फिल्म दर्शकों को बचपन की उस कल्पनाओं भरी दुनिया में ले जाती है, जहाँ हर बच्चा यह मानना चाहता है कि उसके आसपास कोई न कोई सुपर हीरो अवश्य

मौजूद है, जो अपनी असाधारण शक्तियों से हर समस्या का समाधान कर सकता है। यह फिल्म दादा-दादी और नाना-नानी द्वारा सुनाई जाने वाली रहस्यमयी और रोमांचक कहानियों की याद भी ताजा कर देती है। फिल्म का पहला भाग काफी रोचक और मनोरंजक है, लेकिन दूसरे भाग में कहानी कुछ बिखरी हुई महसूस होती है। हालांकि दो एलियंस के आगमन के बाद फिल्म में फिर से ऊर्जा आ जाती है।

अभिनय के दृष्टिकोण से यह फिल्म दिल जीतने में सफल रहती है। बुढ़ापे की कमजोरियों और लोगों की सुपर हीरो जैसी अपेक्षाओं के बीच फंसे दादा के किरदार को जैकी श्रॉफ ने अपने उत्कृष्ट अभिनय से बेहद रोचक बना दिया है। पोते दीपू की भूमिका निभाने वाले मिहिर गोडबोले के साथ उनकी केमिस्ट्री फिल्म के आकर्षण को और बढ़ा देती है।

बच्चों की इस फिल्म में बाल कलाकारों की पूरी टीम सराहना की पात्र है। एलियन विलेन की भूमिका में प्रतीक स्मिता पाटिल भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

यदि आप अपने बचपन की यादों को ताजा करना चाहते हैं और मासूमियत से भरपूर, हल्की-फुल्की मनोरंजक कहानी देखने के इच्छुक हैं, तो यह फिल्म आपके लिए एक अच्छा विकल्प साबित हो सकती है। यह ऐसी फिल्म है जिसे केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि पूरा परिवार एक साथ बैठकर देख सकता है।

सुम्बुल बानो (स0अ0)
कम्पोजिट स्कूल लड़पुरा
ब्लॉक- दनकौर, जनपद- गौतम बुद्ध नगर

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर)

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन 'शिक्षण संवाद' बेसिक शिक्षकों का आपसी सीखने-सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस संकलन में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस संकलन में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदाई होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्च कोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए सम्पादक मण्डल दावा नहीं करता है।

किसी भी सुझाव शिकायत के लिए मिशन के ईमेल- **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप नम्बर **9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. मिशन शिक्षण संवाद ऐप :

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.missionshikshansamvad.app

2. फेसबुक पेज : http://www.facebook.com/shikshansamvad/

3. फेसबुक समूह : http://www.facebook.com/groups/118010865464649

4. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.com

5. X : https://twitter.com/shikshansamvad?t=t61sjplXv4SmGJcD3I8x8Q&s=09

6. यू-ट्यूब : https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

7. व्हाट्सऐप नं0 : 9458278429

8. ई-मेल : shikshansamvad@gmail.com

9. टेलीग्राम : https://t.me/missionshikshansamvad

10. वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद